Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र | जुलाई 2023 (द्वितीय)

लखीराम आर्य अनाथ आश्रम रोहतक में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रोहतक के सांसद डॉ० अरविंद शर्मा जी ने शिरकत की। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने उनका बुका देकर स्वागत किया।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में प्रदेश भर के वेद-प्रचारकों की सामूहिक मीटिंग लेकर उन्हें निर्देश देते हुए गुजरात के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी, श्री रामकुमार आर्य प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र, श्री रमेश आर्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, विशाल आर्य आदि अनेक विद्वज्जन उपस्थित थे।

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी स्वामी नित्यानन्द जी को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में पहुंचने पर शॉल ओढाकर सम्मानित करते हुए गुजरात के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी एवं श्री रामकुमार आर्य प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र आदि।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124
विक्रम संवत् 2080
दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 19 अंक 12

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म्॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जुलाई, 2023 (द्वितीय)
16 से 30 जुलाई, 2023 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय–वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 3
3. शुभकामना 4
4. क्या महाभारत में मन्त्र हैं? 5
5. हे मनुष्य जुआ मत खेल! खेती कर! 7
6. आस्तिकता और चमत्कार 8
7. सृष्टि की रचना किसने, क्यों व कब की? 9
8. सबसे पुरानी व श्रेष्ठ है ऋषियों की वाणी 10
9. आर्य जनता से अपील 11
10. प्राकृतिक आपदाएँ प्रकृति को आंख दिखाने का नतीजा 12
11. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 13

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

□ संकलन–उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे....

कभी-कभी लोग वरुण के पाशों की कड़ाई से तंग आकर उनको तोड़ने का यत्न करते हैं। जब पुलिस का एक सिपाही जो किसी बड़े नगर के चौराहे पर यात्रा-नियमन के अभिप्राय से बड़े-बड़े आदमियों की मोटर-कारों को रोक देता है तो जिनको जल्दी है वे आपे से बाहर हो जाते हैं और जी चाहता है कि पुलिस के सिपाही का विरोध करके अपनी गाड़ी आगे निकाल ले जाएँ, परन्तु वे नहीं जानते कि पुलिस के ये पाश उन्हीं की रक्षा के लिए हैं। यदि कोई दुर्घटना हो जाती है तो भी पुलिस को दोष देते हैं कि उसने पर्याप्त कड़ाई नहीं की।

वरुण के पाश पुलिस के पाशों से भी सूक्ष्म और विश्वव्यापी हैं। अत्याचारी लोग अपनी शक्ति के घमण्ड में कितना भयानक अनर्थ करते रहते हैं, परन्तु उनकी समस्त योजनाएँ क्षणभर में तितर-बितर हो जाती हैं। भारतवर्ष तथा विदेशों के मानव-समाज का इतिहास इनके उदाहरणों से भरा पड़ा है। रावण, कंस, नेपोलियन, हिटलर तथा हर गाँव और कस्बे के छोटे-छोटे डाकू बहुत दिनों नहीं चल पाते। अंग्रेजी की यह कहावत कि मनुष्य क्या सोचता है और ईश्वर क्या कर देता है (Man proposes and God disposes) अधिकतर अत्याचारियों पर ही लागू होती है।

वेदमन्त्र में कहा गया है कि हे वरुणदेव! हमको इन पापों से हानि न पहुँचे। तो क्या प्रार्थना करने से ईश्वर हमारे पापों के लिए हमको दण्ड न देगा? यह तो वैदिक सिद्धान्त नहीं है। **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'** परन्तु जो पापी पाप को समझकर पछतावा करता है वह दण्ड को भी सुगमता से सह सकता है। यह तो नित्य का अनुभव है कि अपनी गलती पर मनुष्य को इतना कष्ट नहीं होता जितना दूसरे की गलती पर होता है। मनुष्यों के पाप उत्पत्ति की अपेक्षा से कई प्रकार के होते हैं–

(1) बाल-वृत्तिज पाप–बच्चे खेल-खेल में चींटियों को मार डालते हैं। मेंढकों पर पत्थर फेंकते हैं, बिना कारण या प्रयोजन के दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं। बड़ी आयु वाले भी जिनकी वृत्ति बालकों जैसी होती है ऐसे अनेक पाप कर बैठते हैं।

(2) वीर-वृत्तिज पाप–ये पाप अपनी वीरता का प्रदर्शन करने के लिए किये जाते हैं। **'हम किसी की परवाह नहीं करते'** ऐसा कहते और केवल बहादुरी दिखाने के लिए अनर्थ करते लोगों को देखा है।

(3) भीति-वृत्तिज पाप–जो भय से किये जाते हैं। बहुत से नर-नारी पाप की प्रवृत्ति न होते हुए भी दूसरों के डर से पाप करने लगते हैं। उनको इतना साहस नहीं होता कि पाप कर्म करने से इनकार कर सकें। इस कोटि के पापी दुनिया में बहुत हैं।

(4) संस्कारज पाप–जो पुरानी बुरी आदतों के कारण होते हैं। जैसे जुआ खेलते देखकर पुराने जुआरी को जुए की हानि जानते हुए भी जुआ खेलने की प्रवृत्ति जाग उठती है।

(5) संस्कृतिज पाप–कुछ ऐसे पाप भी हैं जिनको देश-विदेश या जाति विशेष की संस्कृतियों ने पुण्य मान रखा है, जैसे गाय की कुर्बानी। दयालु मुसलमान भी ईद के दिन गाय को कुर्बान करने के लिए प्रेरित हो जाते हैं।

(6) चतुर्वर्गज पाप–जो काम, क्रोध, लोभ, मोह से उत्पन्न होते हैं।

ये पाप अधिकतर 'अचित्ती' अर्थात् अज्ञानवश ही होते हैं परन्तु 'अज्ञान' से किया हुआ पाप क्षम्य या अदण्ड्य तो नहीं होता (Ignorance of law is no excuse)। इसलिए वरुण के धर्मों को समझना और उनकी अवहेलना करने से अपने को रोकना यह प्राणिमात्र के लिए आवश्यक है।

ऊपर कहा जा चुका है कि वरुण के पाश हमारी भलाई के लिए हैं। गड़रिया भेड़ों को रात को एक बाड़े में

शेष पृष्ठ 16 पर....

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन—कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 40. समर्थ व्यक्ति के लिए कौन-सा हितकारक एवं श्रीसम्पन्न बनाने वाला उपाय है?

उत्तर-समर्थ पुरुष का सब स्थानों तथा सब कालों में क्षमा करने से बढ़कर शोभा वाला अथवा ऐश्वर्ययुक्त और अत्यन्त हितकारी अन्य कुछ भी नहीं माना गया है। हिन्दी के किसी कवि ने कहा है–

''क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो'' यदि कोई सांप जहरीला है और फिर भी अपना जहर (विष) किसी पर नहीं उड़ेलता, समर्थ होते हुए क्षमा करता है, इसी में उसकी महत्ता है। यहाँ महात्मा विदुर जी समर्थ, शक्तिसम्पन्न धृतराष्ट्र को कह रहे हैं–हे राजन्! आप समर्थ हैं, शक्तिसम्पन्न हैं, आपके लिए उत्तम एवं हितकारी कार्य पाण्डवों को क्षमा कर देने में ही है इससे आपका मान बढ़ेगा।

प्रश्न 41. क्षमा किस प्रकार सब के हितकारी है?

उत्तर-(1) जो शक्तिहीन है, दुर्बल है, वह स्वकल्याणार्थ सब को क्षमा कर दे, क्योंकि उसके सामने दूसरा कोई मार्ग या उपाय नहीं है।

(2) जो शक्तिमान् है, बलवान है, वह धर्म के लिए क्षमा कर दे अर्थात् क्षमा करने से धर्म होगा इसलिए क्षमा कर दे।

(3) जिसकी दृष्टि में अर्थ और अनर्थ दोनों समान हैं अर्थात् मध्यम श्रेणी के मनुष्य के लिए क्षमा सदा हितकार है, इसी प्रकार क्षमा सबके लिए हितकारिणी है।

प्रश्न 42. जिस सुख को भोगता हुआ मनुष्य धर्म और अर्थ से भ्रष्ट (हीन) न हो, उसका क्या करे?

उत्तर-जिस सुख का सेवन करता, भोगता हुआ भी मनुष्य धर्म और अर्थ से हीन नहीं होता उसका यथेष्ट उपभोग करे, परन्तु मूर्खों का आचरण (विषयों में आसक्त आसक्ति का आचरण) न करें, अर्थात् अन्यायपूर्वक विचार सेवन एवं आसक्ति न करे।

प्रश्न 43. सम्पत्ति लक्ष्मी कैसे व्यक्ति के पास नहीं रहती?

उत्तर-(1) जो लोग दुःख से पीड़ित हों।

(2) जो लोग प्रमादी (आलसी) हों।

(3) जो नास्तिक हों, नास्तिक का अर्थ है वेद की निन्दा करने वाला, ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाला।

(4) जिस व्यक्ति का अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण न हो, जो इन्द्रियों का दास हो।

(5) जिस व्यक्ति में उत्साह का अभाव हो।

ऐसे व्यक्ति के पास लक्ष्मी का वास नहीं होता अर्थात् ऐसा व्यक्ति सम्पत्ति से हीन हो जाता है।

प्रश्न 44. क्या सरल बनना ठीक नहीं?

उत्तर-मूर्ख लोग सरल स्वभाव और सरलता के कारण ही लज्जाशील मनुष्य को दुर्बल समझते हुए उसे दबाते अथवा तिरस्कृत करते हैं, अतः अत्यन्त सरल बनना भी ठीक नहीं।

प्रश्न 45. क्या अति सर्वत्र ही दुःखदायी है?

उत्तर-अति सर्वत्र दुःखदायी ही होता है। क्योंकि–

(1) लक्ष्मी न तो अत्यन्त गुणवान् व्यक्तियों के पास रहती है और न ही गुणहीनों के पास ठहरती है। यह न तो गुणों को चाहती है और न ही निर्गुणता से रीझती है। पगली गौ के समान यह लक्ष्मी किसी-किसी स्थान पर ही टिक पाती है।

(2) अत्यधिक श्रेष्ठ व्यक्तियों के पास लक्ष्मी नहीं टिकती। लोग उनकी श्रेष्ठता के कारण उन्हें ठग लेते हैं।

(3) अत्यधिक दानशील के पास लक्ष्मी नहीं टिकती।

(4) अत्यधिक शूरवीर के पास भी धन कमाने की बजाय कर्त्तव्य पालन में विश्वास करने के कारण लक्ष्मी नहीं टिकती।

(5) अत्यधिक दृढ़व्रती भी अपने नियम में पक्का रहता है। अनावश्यक समझौता नहीं करता, इसलिए लक्ष्मी उसके पास भी नहीं टिकती।

क्रमशः अगले अंक में...

शुभकामना

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, संपर्क-B-2, 92/7B, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर (पंजाब) मो० 9464064398

प्रसंग-एक साधारण-सा समझे जाने वाले माली की भी यही दिली भावना होती है कि मेरा लगाया पौधा हर तरह से आगे से आगे तरक्की करता हुआ फूले-फले। क्योंकि वह भी विचारशील सामाजिक प्राणी है। मनुष्य माता-पिता जहाँ सर्वथा स्पष्ट रूप से अपनी चेतना चरितार्थ करने वाले में सर्वस्व हैं, वहाँ अपनों की काया का अंग-अंग अपने शरीर का अंश होता है। इससे भी बढ़कर अपनों का दिल-दिमाग भी अपने से जुड़ा होता है।

किसी व्यक्ति में जहाँ जीने की भावना स्वाभाविक होती है, वहाँ सन्तान की चाहना भी नैसर्गिक होती है। क्योंकि व्यक्ति सन्तान को अपने परिवार की परम्परा का प्रतिनिधि मानता है। पिता-पुत्र-पौत्र रूप में व्यक्ति अपने आपको अमर समझता है।

परिवार-परम्परा की प्रगति में महिला-पुरुष दोनों का योगदान है। परिवार के विकास में माता-पिता एक-दूसरे के पूरक, सहायक हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा, असमर्थ है।

अत एव माता-पिता बच्चों को अपना आप अनुभव करते हुए उनको हर तरह से फूलता-फलता देखना चाहते हैं। क्योंकि इससे उनकी खुशियाँ दुगनी हो जाती हैं। उनकी उपस्थिति में व्यक्ति हर कारोबार दुगने उत्साह से करता है।

इन्हीं सारी भावनाओं, उड़ीकों, तमन्नाओं को वेद ने सु-सह-असति के शब्दों से अभिव्यक्त किया है। जिसका भाव है-साथ-साथ रहना, जीना सु-रूप में हो। तभी तो यह गाया गया-जिस से बढ़े सुख-सम्पदा। इसकी प्राप्ति की पूरी प्रक्रिया प्रदर्शित करते हुए ऋग्वेद का अन्तिम मन्त्र इस प्रकार से समझाता है। वह वेदमन्त्र है-

ओम् समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

(ऋग्वेद 10.191.4)

यह मन्त्र जहाँ सामाजिक स्थिति, सामञ्जस्य का चित्रण करता है, वहाँ यह मन्त्र पारिवारिकता का भी स्मरण कराता है। क्योंकि सामाजिकता का प्रथम पग परिवार ही होता है।

'वः आकूतिः समानी' हे सामाजिक सम्बन्ध को स्वीकार करने वालो! समाज में जीना चाहने वालो! एतदर्थ किसी प्रकार का संगठन बनाने वालो! "तुम्हारी आकूति=अभिप्राय, निर्णय निश्चय एक जैसा हो। आकूति शब्द अभिप्राय के अर्थ में प्रसिद्ध है। अभिप्राय किसी की इच्छा,

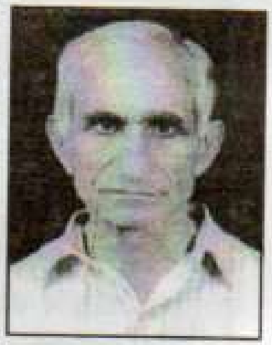

सार, परिणाम, निर्णय, तात्कालिक लक्ष्य, उद्देश्य ही होता है। उसकी समानता संगठन को सफल, स्थायी, विजयी बनाती है।"

'वः हृदयानि समाना' इस दूसरे चरण का अर्थ है-तुम्हारे हृदय समान हों। भावनाओं, स्नेह, अपनत्व का जो उद्गम, आधार स्थल है, वह ही हृदय है। उस हृदय की पारस्परिक, श्रद्धा, निष्ठा, आस्था एक जैसी हो। हृदय में उभरने वाली प्रसन्नता, साथ-साथ रहने की तड़प, अपनों को और एक-दूसरे को आदर-स्नेह देने की चाहना, अपना समझने की भावना समान हो अर्थात् किसी भी प्रकार से एकांगी, एकतरफा, एक ओर झुकी हुई या एक ओर से पाली जाती हुई न हो। ऐसा होने से संगठन शक्तिशाली होता है।

'समानमस्तु वो मनः' यह मन्त्र का तीसरा चरण है, जिसका अर्थ है-तुम्हारा मन भी समान हो। मन भी बुद्धि आदि की तरह अन्तःकरण=अन्दर का साधन है। जो किसी बात, व्यवहार के सम्बन्ध में संकल्प-विकल्प, ऊहा-पोह, विचार-विमर्श, पक्ष-विपक्ष प्रस्तुत करता है। अर्थात् हमारा सोचना, विचारना भी समान हो। जिसका निष्कर्ष है कि सांझे जीवन की हर बात में सहमति हो, छिपाव का अभाव हो।

आगे चौथे चरण में मन्त्र कहता है। ऐसी तीनों स्थितियाँ जहाँ समान होती हैं, वहीं यथा-तथा सु+सह-असति=एकरूपता, एक साथ रहना, जीना, समस्थिति, स्वाभाविक भावना सु-रूप में सामने आती है। जहाँ जितने अंश में अपनापन कम होता है या व्यवहार में अन्तर,

शेष पृष्ठ 16 पर....

क्या महाभारत में मन्त्र हैं?

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

गतांक से आगे....

प्रिय पाठकवृन्द! द्रौपदी के विषय में एक और मिथ्या धारणा समाज में प्रचलित है कि उसने अपने घर में आए दुर्योधन को 'अन्धे का बेटा अन्धा' कहा था, जिससे क्रोधित होकर दुर्योधन ने जुए में जीतकर द्रौपदी का अपमान किया। इसी के कारण महाभारत युद्ध हुआ। कड़वे वचन बोलने के परिणाम की शिक्षा के लिए तो जीवन भर कड़वे वचन बोलने वाले दुर्योधन का नाम लिया जा सकता है, द्रौपदी को असभ्य बनाने की क्या जरूरत है? देखिये-

जब दुर्योधन पाण्डवों के विचित्र सभा भवन में धक्के खा रहा था, तो वहाँ उसे देखकर हँसने वालों में द्रौपदी का नाम नहीं है-''दुर्योधन को जल में गिरा देखकर भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और उनके सेवक हँस पड़े। राजा (युधिष्ठिर) के आदेश से उसे शुभ वस्त्र दिये गये थे।''

(सभा पर्व 47-7,8,9)

वास्तव में दुर्योधन पांडवों के धन-वैभव से ईर्ष्या कर रहा था और उसे पाना चाहता था। पाण्डवों को युद्ध में जीतना उसके वश में नहीं था। यह बात उसने शकुनि को बताई। शकुनि ने उसे (धन को) पाने का उपाय बताया था-जूआ खेलना। उसके लिए राजा धृतराष्ट्र की अनुमति लेनी आवश्यक थी। धृतराष्ट्र से जब उन दोनों ने पूछा तो उसने विदुर की सलाह लेनी चाही। तब दुर्योधन ने दबाव बनाते हुए कहा-

राजेन्द्र! विदुर जी जब आपसे मिलेंगे, तब अवश्य ही आपको इस कार्य से निवृत्त कर देंगे। यदि आपने इस कार्य से मुंह मोड़ लिया तो मैं निःसन्देह प्राण त्याग दूँगा। (सभा पर्व 49-45) यह सुनकर धृतराष्ट्र पर पुत्र-मोह सवार हो गया और उन्होंने द्यूत के लिए सभा भवन बनाने का आदेश दे दिया। पता लगने पर विदुर जी ने मना कर दिया, तो दुर्योधन ने धृतराष्ट्र पर पुनः दबाव बनाने के लिए पाण्डवों की अपार धन-दौलत से ईर्ष्या के साथ बाद में पाण्डवों के सभा भवन में हुए अपने अपमान (उपहास) को नमक-मिर्च लगाकर कहा-

''राजेन्द्र! मेरी यह साधारण लक्ष्मी मुझे प्रसन्न नहीं कर पाती। मैं तो कुन्दीनन्दन युधिष्ठिर की इस जगमगाती हुई लक्ष्मी को देखकर व्यथित (दुःखी) हो रहा हूँ। सारी पृथ्वी युधिष्ठिर के अधीन हो गई है....।''

(सभा पर्व 18-19)

वस्त्रमुत्कर्षति मयि प्राहसत् स वृकोदरः।
शत्रोर्ऋद्धि विशेषेण विमूढं रत्नवर्जितम्॥
तत्र मां प्राहसत् कृष्णः पार्थेन सह सुस्वरम्।
द्रौपदी च सह स्त्रीभिर्व्यथयन्ती मनो मम॥

(50-26,30)

''हे भारत (धृतराष्ट्र)! जब मैं (पुस्करिणी में उतरने के लिए) वस्त्र उठाने लगा, तब भीमसेन ठठाकर हँस पड़े। शत्रु की विशिष्ट समृद्धि से मैं मूढ-सा हो रहा था और रत्नों से रहित तो था ही। ...(मुझे पानी में गिरा देखकर) वहाँ कृष्ण अर्जुन के साथ मेरी ओर देखकर जोर-जोर से हँसने लगे। स्त्रियों सहित द्रौपदी भी मेरे हृदय में चोट पहुँचाती हुई हँसी थी।''

भीमसेन तत्रोक्तो धृतराष्ट्रात्मजेति च।
सम्बोध्य प्रहसित्वा च इतो द्वारं नराधिपः॥

(सभा० 50-35)

''(नकुल-सहदेव तो मुझे अपने हाथों से पकड़कर कह रहे थे-राजन्! द्वार इधर है) महाराज! वहाँ भीमसेन ने मुझे 'धृतराष्ट्र पुत्र' कहकर सम्बोधित किया और हँसते हुए कहा-राजन्! इधर दरवाजा है।''

यहाँ पाण्डवों की सम्पत्ति के लालची व ईर्ष्यालु दुर्योधन ने कृष्ण व द्रौपदी आदि स्त्रियों का नाम अपनी तरफ से जोड़ा है, पर उसने यह नहीं कहा कि द्रौपदी ने उसे 'अन्धे का पुत्र अन्धा' कहा हो। फिर हम निर्दोष द्रौपदी को बदनाम करने का पाप क्यों करें?

निस्सन्देह महाभारत में समय-समय पर प्रक्षिप्त हुआ है। स्वार्थी लोगों ने अपने समय की कुप्रथा को शास्त्र-सम्मत सिद्ध करने के लिए प्राचीन ग्रन्थों में मिलावट की। उसी का परिणाम है कि राजा पाण्डु की माद्री का सती

होना। यह तो सब मानते हैं कि आर्यों में तब सती (मृत पति के साथ जल मरना) प्रथा नहीं थी-राजा शान्तनु के मरने पर सत्यवती सती नहीं हुई, न विचित्रवीर्य के मरने पर अम्बिका व अम्बालिका सती हुई, फिर पाण्डु के मरने पर माद्री सती क्यों हुई? जबकि बाद में दुर्योधन, कर्ण व अभिमन्यु आदि योद्धाओं के मरने पर भी उनकी रानियाँ व उत्तरा आदि सती नहीं हुई क्योंकि तब यह कुप्रथा थी ही नहीं। देखिये-

महाभारत आदिपर्व के 124वें अध्याय में राजा पाण्डु की मृत्यु और रानी माद्री का सती होना लिखा है। इस अध्याय में (गीता प्रेस संस्करण) संख्या वाले 31 व बीच में बिना संख्या वाले लगभग 50 श्लोक हैं। 23-24वें श्लोक में कुन्ती सती होने की बात कहती है (जो अब तक कभी नहीं हुई थी), फिर माद्री राजा की मृत्यु का कारण स्वयं को मानती हुई सती होने के लिए कहती है और 31वें श्लोक में लिखा है-

इत्युक्त्वा तं चिताग्निस्थं धर्मपत्नी नरर्षभम्।
मद्रराजसुता तूर्णमन्वारोहद् यशस्विनी॥
(124-31)

वैशम्पायन जी कहते हैं-''जनमेजय! कुन्ती से यह कहकर पाण्डु की यशस्विनी धर्मपत्नी माद्री चिता की आग पर रखे हुए नरश्रेष्ठ पाण्डु के शव के साथ स्वयं भी चिता पर जा बैठी।'' इससे अगले (बिना संख्या वाले) श्लोकों में लिखा है कि ऋषियों ने वन में ही उनका दाह-संस्कार किया। बाद में ऋषि कुन्ती, पाण्डु के पुत्रों, पाण्डु व माद्री के शवों (जिसे व्याख्याकार जबरदस्ती अस्थियाँ लिख रहा है) को लेकर हस्तिनापुर गये और उनका विधिपूर्वक संस्कार किया गया।

यहाँ विचारणीय बात यह है कि हस्तिनापुर नरेश पाण्डु दिग्विजय के बाद दोनों रानियों के साथ रोग-निवृत्ति के लिए जब वन-विहार हेतु गए तो क्या उनके भाई कोई अंगरक्षक, सेवक या सैनिक नहीं गए होंगे? राजा पाण्डु की मृत्यु की सूचना हस्तिनापुर भेजे बिना ही ऋषियों ने वन में ही दाहसंस्कार कैसे कर दिया? यदि वहाँ दाह-संस्कार हो चुका था, तो हस्तिनापुर में पुनः संस्कार क्यों किया गया? 125वें अध्याय में लिखा है-

तस्येमानात्मजान् देहं भार्यां च सुमहात्मनः।
स्वराष्ट्रं गृह्य गच्छामो धर्म एष हि नः स्मृतः॥
(125-4)

तस्मिन्नेव क्षणे सर्वे तानादाय प्रतस्थिरे।
पाण्डोर्दारांश्च पुत्रांश्च शरीरे ते च तापसाः॥
(125-7)

इमे तयोः शरीरे द्वे पुत्राश्चेमे तयोर्वराः।
क्रियाभिरनुगृह्यतां सह मात्रा परंतपाः॥
(125-32)

ऋषियों ने कहा-उन (पाण्डु) के इन पुत्रों को, पाण्डु और माद्री के शरीरों की अस्थियों को तथा उन महात्मा नरेश की महारानी कुन्ती को लेकर हम लोग उनकी राजधानी में चलें। इस समय यही हमारे लिए धर्म प्रतीत होता है।

उन सब तपस्वी मुनियों ने पाण्डु पत्नी कुन्ती, पाँचों पाण्डवों तथा पाण्डु और माद्री के शरीर की अस्थियों को साथ लेकर उसी क्षण वहाँ से प्रस्थान कर दिया।

ऋषियों ने भीष्म से कहा-ये पाण्डु और माद्री दोनों के शरीरों की अस्थियां हैं और ये ही उनके श्रेष्ठ पुत्र हैं, जो शत्रुओं को संतप्त करने की शक्ति रखते हैं। आप माद्री और पाण्डु की श्राद्ध-क्रिया करने के साथ ही माता सहित इन पुत्रों को भी अनुगृहीत करें। (गीताप्रेस संस्करण)

माद्री को सती मानने वालों ने देह, शरीर आदि शब्दों का अर्थ ही बदल दिया-अस्थि (दाह-संस्कार के बाद बची हड्डियाँ)। यह सीधा-सीधा स्वार्थ है, हठ है, दुराग्रह है। व्यक्ति का नाम या पद शरीर (या शव) तक ही रहता है, वह अस्थियों को नहीं दिया जाता। यदि हस्तिनापुर में महाराज पाण्डु की व माद्री की अस्थियाँ लाई गई थीं, तो उन्हें पाण्डु व माद्री नहीं कहा जा सकता। उन्हें स्नान कराने, चन्दन लगाने और वस्त्रों से ढकने के बाद उनके जीवित के समान शोभा पाना यही सिद्ध करता है कि माद्री की मृत्यु आत्मग्लानि के कारण हृदयाघात से हुई थी और उन दोनों के शव हस्तिनापुर में लाए गए थे, वहीं उनका विधिपूर्वक दाह-संस्कार हुआ था, वन में नहीं।

यह अगले अध्याय में विस्तार से लिखा है-

पाण्डोर्विदुर सर्वाणि प्रेतकार्याणि कारय।
राजवद्राजसिंहस्य माद्रयाश्चैव विशेषतः॥ (126-1)

शेष पृष्ठ 16 पर....

हे मनुष्य जुआ मत खेल! खेती कर!

❑ डॉ० विवेक आर्य

महाभारत में द्रौपदी चीरहरण का प्रसारण हुआ। हम महाभारत के यक्ष-युधिष्ठिर संवाद आदि का अवलोकन करते हैं, तो युधिष्ठिर एक बुद्धिमान् व्यक्ति के रूप में प्रतीत होते हैं। जब महाभारत में उन्हें जुआ खेलता पाते हैं, तो एक बुद्धिमान् व्यक्ति को एक ऐसें दोष से ग्रसित पाते हैं जिसने न जाने कितने परिवारों को सदा के लिए नष्ट कर दिया। महाभारत का युद्ध पांडवों और कौरवों के मध्य भी इसी जुए की लत के कारण हुआ था। जिससे देश को अत्यंत हानि हुई थी। स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट रूप से यही लिखते हैं कि देश में वैदिक धर्म के लोप का काल महाभारत के काल से पहले आरम्भ हुआ था। यह जुआ कांड और भाई-भाई का वैमनस्य उसी का प्रतीक है।

ईश्वरीय वाणी वेदों में जुआ खेलने को स्पष्ट रूप से निषेध किया गया है। ऋग्वेद के 10 मंडल के 34 वें सूक्त को 'कितव' सूक्त के नाम से जाना जाता है। इस सूक्त में कर्मण्य जीवन का उपदेश दिया गया है। वेद इस सूक्त के माध्यम से मनुष्य को आंतरिक दुर्बलताओं और अधोगामी सामाजिक प्रवृतियों से लड़ने का उपदेश भी देते हैं। कितव का अर्थ होता है जुआरी। इस सूक्त के प्रथम 14 मन्त्रों में वेद एक जुआरी की व्यक्तिगत हीन, दयनीय पारिवारिक दशा का, उसकी पराजय मनोवृति का बड़ा ही प्रेरणादायक चित्रण किया है।

प्रथम मंत्र में जुआरी कहता है कि चौसर के फलक पर बार-बार नाचते हुए ये जुएं के पासे मेरे मन को मादकता से भर देते हैं। जिसके कारण बार-बार इच्छा होते हुए भी मैं यह व्यसन छोड़ नहीं पाता। पासों के शोर को सुनकर स्वयं को रोक पाना मेरे लिए कठिन है।

द्वितीय मंत्र में आया है कि एक जुआरी सब कुछ छोड़ सकता है। यहाँ तक की अपनी सेवा करने वाली गुणवान और प्रिय पत्नी तक को छोड़ देता है। मगर यह जुआ उससे नहीं छूटता। जब जुएं का नशा उतरता है, तब अपनी पत्नी के परित्याग का उसे पश्चाताप होता है। जुआ खेलने के कारण परिवार में उसका कोई सम्मान नहीं करता। उसकी हेय दशा इसी जुएं के कारण हुई है।

तीसरे मन्त्र में एक जुआरी अपने किये पर पश्चाताप करता हुआ सोचता है कि उसकी सास उसकी निंदा करती है। पत्नी घर में घुसने नहीं देती। आवश्यकता होने पर भी कोई रिश्तेदार या सम्बन्धी मुझे धन नहीं देता। लोग सहायता न देने के लिए अलग-अलग बहाने बनाते हैं, क्योंकि सभी यह सोचते हैं कि यह धन जुआ खेलने में लगा देगा। वृद्ध मनुष्य का बाज़ार में जैसे कोई लाभ नहीं रहता वैसी ही हालत एक जुआरी की होती है।

चौथे मंत्र में आया है कि जुआरी के साथ-साथ उसकी पत्नी का भी मान चला जाता हैं। जुए में हारने पर आखिर में एक जुआरी अपनी पत्नी को दांव पर लगा देता है, तो उसकी पत्नी का भी अन्य लोग अपमान करते हैं।

इस सूक्त के नौवें मन्त्र में जुएं के पासों का सजीव और काव्यात्मक चित्रण है। इसमें लिखा है कि यद्यपि पासे नीचे चौसर पर रहते हैं, पर उछलते हैं। तब अपना प्रभाव दिखाते हैं। जुआरियों के हृदय में हर्ष-विवाद आदि भावों की सृष्टि करते हैं। उनके मस्तक को जीतने पर ऊँचा कर देते हैं और हारने पर झुका देते हैं। ये बिना हाथ वाले हैं। फिर भी हाथ वालों को पराजित कर देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ये पासें अंगारे हैं जिन्हें कभी बुझाया नहीं जा सकता। ये शीतल होते हुए भी पराजित जुआरी के हृदय को दग्ध कर देते हैं। इस सूक्त के दसवें मंत्र में जुआरी के परिवार की दशा का अत्यन्त मार्मिक वर्णन है। धन आदि साधनों से वंचित और पति द्वारा उपेक्षित जुआरी की पत्नी दुःखी रहती है। वह अपनी और अपनी संतान की दशा पर विलाप करती हैं। ऋण के बोझ तले दबा जुआरी आय से वंचित होकर कर्ज चुकाने के लिए रात में अन्यों के घरों में चोरी करने लगता है।

10वें मंत्र में आया है कि दूसरे के घर में सजी-धजी और सुख-संपन्न स्त्रियों को देखकर और अपनी हीन-दुःखी स्त्री और टूटे-फूटे घर की अवस्था देखकर जुआरी का चित्त व्यथित हो उठता है। वह निश्चय करता है कि अब मैं प्रातःकाल से पुरुषार्थ से जीवनयापन करूँगा। सही

शेष पृष्ठ 15 पर....

आस्तिकता और चमत्कार

❑ सहदेव समर्पित, संपादक-शांतिधर्मी मासिक पत्रिका, जींद, हरियाणा

एक विदेशी विचारक ने कहा था कि दुनिया में और कहीं हो न हो भारत में भगवान् अवश्य है, क्योंकि कोई भी इस देश को बसाना नहीं चाहता, फिर भी यह बसा हुआ है; यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। नास्तिक विचार वाले लोग भगवान् के बारे में जो मरजी कह देते हैं। उनकी भगवान् से सबसे बड़ी शिकायत यह होती है कि इतनी गड़बड़ हो रही है फिर भी भगवान् कुछ करता क्यों नहीं। इस ब्रह्माण्ड में इतना कुछ हो रहा है जो मनुष्य कर नहीं सकता फिर भी उन्हें यह सब दिखाई नहीं देता। लेकिन जो काम मनुष्य कर सकता है, मनुष्य को ही करने चाहिएं, मनुष्यों के करने से ही उन कार्यों की सार्थकता है, उन कार्यों के लिए भगवान् को दोष देता रहता है और फिर एक नाजुक बच्चे की तरह कह देता है कि जा भगवान् मैं तुझे नहीं मानता। तू है ही नहीं। भगवान् को इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है कि कोई उसे मानता है या नहीं। कोई उससे बात करे (उपासना) तो इससे उसको कोई लाभ नहीं होता। जो उससे बात करता है, वही इससे लाभ उठाता है। नास्तिक भी दु:ख होने पर रोते बिलखते हैं, सुख होने पर खुश होते हैं। कोई गलत कार्य करते समय उनको भी कोई रोकने की प्रेरणा-सी करता अनुभव होता है। अच्छा कार्य करने पर उनको भी आत्म-संतुष्टि मिलती है।

आज लगता है कि आस्तिक लोग नास्तिकों से ज्यादा नास्तिक हैं। उसे ईश्वर की सत्ता के स्पष्ट दिखाई देने वाले लक्षणों, युक्तियों, प्रमाणों से कुछ लेना देना नहीं है। उसे तो वह चमत्कार चाहिए जिसे वह चमत्कार समझता है। यह विराट् ब्रह्माण्ड, यह अद्भुत व्यवस्था, प्रकृति के नियम, कर्म-फल व्यवस्था, यह सृष्टि रचना-उसे चमत्कार नहीं लगता। ये तथाकथित आस्तिक लोग समोसे खाकर धनप्राप्ति या नौकरी मिलने को चमत्कार मानते हैं। कादियानी पैगम्बर ने भविष्यवाणी की थी किसी के मरने की। कई वर्ष बाद उस महापुरुष (पंडित लेखराम) को छुरे से मार दिया गया। आज तक वे इसी को चमत्कार प्रचारित कर रहे हैं। आस्तिक कहलाए जाने वाले लोग अविवाहित स्त्री से संतान होना, मुरदे का जी उठना आदि चमत्कारों पर आधारित हैं। ये चमत्कार न हों तो उनकी आस्तिकता का आधार ही समाप्त हो जाता है। आप धार्मिक चैनल देखें। कोई गुरु, कोई भगवान्? अपने आपको पूरा भगवान् सिद्ध करने के लिए अपने

अनुयायियों के अनुभव सुनवाने पर पर्याप्त समय खर्च करता है। आध्यात्मिक कही जाने वाली पत्रिकाओं में अनेक पृष्ठ इसी कार्य के लिए होते हैं। चेलों के जो अनुभव होते हैं वे इस तरह के नहीं कि हमारी इस तरह से आत्मिक उन्नति हो गई, हमने योग में यह गति प्राप्त कर ली, बल्कि चमत्कारों की साक्षियाँ होती हैं। असाध्य रोग ठीक हो गया, नौकरी मिल गई। व्यापार में लाभ हो गया। यह आस्तिकता तो नास्तिकता से भी ज्यादा हानिकारक है।

आस्तिकता जीवन की आधारशिला है और आस्तिकता की आधारशिला है परमेश्वर की सर्वव्यापकता और न्याय-व्यवस्था को जानना और मानना। अच्छी प्रकार जानकर ही मानने से कुछ लाभ हो सकता है। जो यह मानते और जानते हैं कि परमेश्वर न्यायकारी है, वह कर्मों का फल पूरा-पूरा देता है और यह जानकर परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार आचरण करते हैं वे ही सच्चे आस्तिक हैं। वह परमेश्वर का भक्त और प्रशंसक भी है। जो यह सोचता है कि किसी व्यक्ति विशेष की सिफारिश से परमेश्वर हमारे पापकर्मों का फल नहीं देगा या पापों के बदले में सुख देगा-वह वास्तव में परमेश्वर का सबसे बड़ा निन्दक और नास्तिक है। आप्त पुरुषों के उपदेश से और परमात्मा की उपासना करने से हम आगे पाप करने से हट जाते हैं यह क्या कोई छोटा चमत्कार है।

यदि आस्तिक होने के बाद भी व्यक्ति के कर्म में सुधार नहीं आया तो आस्तिक होने का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए आस्तिकता का मूल आधार है परमेश्वर की सर्वव्यापकता।

शेष पृष्ठ 15 पर....

सृष्टि की रचना किसने, क्यों व कब की?

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, मो० 9412985121

गतांक से आगे....

ईश्वर से बनी सृष्टि का प्रयोजन क्या है? यह प्रश्न भी मनुष्य के मन में आना स्वभाविक है। इसका उत्तर है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, वह सृष्टि की रचना कर सकता है तथा पहले भी पूर्वकल्पों में उसने अनेक बार सृष्टि की रचना की है। इसका कारण है कि सत्, रज व तम गुणों वाली सूक्ष्म प्रकृति पूर्णतयः उसके वश व नियंत्रण में है। उस प्रकृति के अस्तित्व का होना ही सृष्टि के निर्माण के लिए है। सूक्ष्म व एकदेशी तथा ससीम पदार्थ जीवात्मा संसार व आकाश में बढ़ी वा अनन्त संख्या में हैं, उनके पूर्वकल्पों में प्रलय से पूर्व मनुष्य योनि में किए गये कर्म भोग करने से बचे हुए हैं। ईश्वर सभी जीवों को उनके अतीत के कर्मों के अनुसार सुख व दुःख दे सकता है। ईश्वर सृष्टि की रचना कर सकता है, यदि वह सृष्टि की रचना करता है तो वह जीवात्माओं वा मनुष्यों द्वारा प्रशंसित होता है और यदि न करे तो उसे निठल्ला वा निष्क्रिय कहेंगे। एक बच्चा स्कूल जाता है परन्तु पढ़ाई मन लगाकर नहीं करता, परीक्षा में फेल हो जाता है, घर वाले उसे निठल्ला व निकम्मा कहते हैं। वह सामान्य रूप से खाता-पीता व सभी काम करता है परन्तु पढ़ाई की उपेक्षा करता है जिसे वह प्रयास करके, संकल्प कर उसका आचरण करके को तो कर सकता है, परन्तु करता नहीं और अपनों व दूसरों के द्वारा निन्दित होता है। ऐसा ही कुछ-कुछ सृष्टि की रचना न करने पर ईश्वर के विषय में भी कहा जायेगा। बुद्धिमान् व विवेकशील मनुष्य कभी कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं करते। प्रकृति का प्रत्येक प्राणी ही नहीं अपितु जड़ परमाणु व पदार्थ भी क्रियाशील व गतिशील देखे जाते हैं वैसे ही चेतन, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ ईश्वर सृष्टि रचना में समर्थ होने व इसे अपना कर्तव्य जानकर सृष्टि की रचना सप्रयोजन करता है जिससे प्रलय अवस्था में प्रसुप्त जीवों को सुख व उनके पूर्व कर्मों का भोग प्राप्त हों सकें। इसी प्रयोजन से ईश्वर सृष्टि व मनुष्यों सहित नाना प्राणी योनियां बनाकर उनका संचालन व व्यवस्था कर रहा है। सृष्टि कब बनी है, इसका उत्तर भी वैदिकधर्मियों के पास है। आर्य लोग सृष्टि के प्रथम दिन से ही काल गणना करते आये हैं। उन्होंने पूरे सृष्टि आरम्भ से सृष्टि काल को 1000 चतुर्युगियों में बांटा है। एक चतुर्युगी में चार युग क्रमशः सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग होते हैं। कलियुग 4.32 लाख वर्षों का होता है, इसका दुगुणा द्वापर, तीन गुणा त्रेता और चार गुणा सतयुग होता है। चार युगों अर्थात् एक चतुर्युगी का योग 43.20 लाख वर्ष होता है। जब ईश्वर ने अमैथुनी सृष्टि की तो प्रथम मन्वन्तर का सतयुग का प्रथम दिन था जो उत्तरोत्तर बढ़ते आ रहे हैं। पूरे सृष्टिकाल की गणना करने के लिए 71 चतुर्युगियों के समान अवधियों के 14 मन्वन्तर बनाये हैं। प्रतिदिन एक दिन जोड़ते व एक दिन घटाते जाते हैं। वर्तमान में सृष्टि के बनने व मानव के उत्पन्न होने से अब तक 1,96,08,53,123 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नया वर्ष आरम्भ होता है। इतना काल सृष्टि उत्पन्न होकर मनुष्योत्पत्ति के बाद व्यतीत हुआ है। इस समय मानव व वेद सृष्टि संवत् के एक अरब छियानवे करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ तेईसवां वर्ष चल रहा है। इतने वर्ष पूर्व हमारी इस सृष्टि का निर्माण हुआ था। सृष्टि संवत् को स्मरण रखने के लिए सभी आर्य वैदिक धर्मी लोग यज्ञादि से पूर्व संकल्प पाठ का उच्चारण करते हैं। उसके अनुसार भी यही सृष्टि संवत् विद्यमान है। सृष्टि विषयक ज्ञान के लिए सभी जिज्ञासुओं को वैदिक साहित्य का अध्ययन करना चाहिये। ऐसा करने पर वह संसार को भली प्रकार जानने सहित अपने जीवन के उद्देश्य वा लक्ष्य को भी जान सकेंगे। मनुष्य जीवन का उद्देश्य जानकर और ईश्वर की उपासना वा सत्कर्मों को करके मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति अथवा अभ्युदय और निःश्रेयस को प्राप्त हो सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति होने पर मनुष्य का जीवात्मा 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक दुःखों से पूर्णतया मुक्त होकर ईश्वर के आनन्दस्वरूप में ईश्वर के साथ रहता हुआ आनन्द को भोक्ता है। यही मनुष्य की जीवात्मा का चरम लक्ष्य है। सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर मोक्ष विषय को पूर्णतयः समझा जा सकता है। वैदिकधर्मी सभी ऋषि, योगी एवं इतर आर्यजन इन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपना सारा जीवन अभ्युदय व मोक्ष प्राप्ति के कार्यों में ही लगाते थे। हम समझते हैं कि पाठक हमारे सृष्टि की रचना विषयक इस विषय को जानने में समर्थ होंगे।

सबसे पुरानी व श्रेष्ठ है ऋषियों की वाणी

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

आर्यावर्त ऋषियों की भूमि है। अधिकांशत: आश्रम नदियों के पास हुआ करते थे, जो ऋषियों की तपस्थली थे। वनों में ही गुरुकुल होते थे। आश्रम व गुरुकुलों के चारों ओर सुन्दर रंगीन पुष्पलता व मधुर फलों वाले वृक्ष होते थे। आश्रमों की छटा निराली होती थी। प्रात:-सायं वहाँ से वेद की ऋचाओं की भावविभोर कर देने वाली मधुर ध्वनि सुनाई देती थी। विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों की यहाँ शिक्षा दी जाती थी। चारों वेद, उपवेद, छह दर्शन, ब्राह्मणग्रन्थ, शिक्षा-कल्प-व्याकरण, निघण्टु, निरुक्त व ऋषिप्रणीत वात्स्यायन, पतञ्जलि, व्यास, गौतम, कपिल, भृगु, बौधायन आदि ऋषि-मुनियों के ग्रन्थ तथा भाष्यों की शिक्षा दी जाती थी। इसके साथ गुरुकुलों में अन्य विद्यायें भी पढ़ाई जाती थीं।

हम जिन महापुरुषों को याद करते हैं वह गुरुकुल व आश्रमों में गुरुओं तथा ऋषि-मुनियों के सान्निध्य में रहकर ही पढ़े थे। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम तथा उनके पूर्वज महाराजा रघु, अज तथा दिलीप आदि महाराज दशरथ उनके महामन्त्री सुमन्त, महाभारत के पांचों पाण्डव, कर्ण, दुर्योधन, धृतराष्ट्र के महामन्त्री विदुर, श्रीकृष्ण और प्रतापी राजा चक्रवर्ती शासक चन्द्रगुप्त मौर्य उनके महामन्त्री चाणक्य ऋषि-महर्षियों के गुरुकुलों तथा आश्रमों की ही देन थे।

ऋषियों की जो व्यवस्था थी, अत्युत्तम थी। उनकी शिक्षा व्यवस्था से चक्रवर्ती शासक होते थे। वैदिक शिक्षा से ही समाज उन्नति के शिखर पर था। समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था थी, वर्ण का निर्धारण गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित था। जीवन के चार विभाग अवस्थानुसार थे, जिन्हें आश्रम व्यवस्था कहते थे। प्रथम ब्रह्मचर्याश्रम, दूसरा गृहस्थाश्रम, तीसरा व चौथा वानप्रस्थ व संन्यास आश्रम थे। यह व्यवस्था इतनी श्रेष्ठ थी कि मनुष्य आयु के अनुसार जीवन की उन्नति की ओर अग्रसर रहता था। उधर ऐसे ही गर्भ से लेकर मृत्युपर्यन्त सोलह संस्कार होते थे। जीवन में गुणों की वृद्धि व सामाजिक दायित्वों, कर्तव्यों का पालन होता रहता था। सर्वाधिक ध्यान शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति की ओर था। ऐसी सुन्दर व श्रेष्ठ व्यवस्था विश्व के किसी भी कोने में नहीं मिलेगी। यह व्यवस्था ईश्वरीय है। वेद द्वारा दी गई ऋषि-मुनियों द्वारा गुरुकुल आश्रम वैदिक संस्थानों में शिष्यों को दी जाती रही है।

भारतीय संस्कृति वेद आधारित थी, इसकी प्रशंसा विदेशी कवियों, लेखकों ने भी की है। यहाँ के योद्धाओं चक्रवर्ती शासकों की विदेशों में भी प्रशंसा होती है। विश्व में भारत धर्मगुरु रहा। अलबरुनी फाह्यान ह्वेन सांग जैसे अनेक लेखक इतिहासकारों ने भारत के गौरवपूर्ण इतिहास की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इस आदर्श का कारण हमारे ऋषि ही तो थे। आज हमने उन्हें प्राय: भुला-सा दिया है। हम उनके ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करते, उनके बताए रास्ते पर नहीं चलते। आज की शिक्षा में वैशेषिक, न्यायसूत्र, योगदर्शन, सांख्यसूत्र, ब्राह्मणग्रन्थ, शिक्षा, कल्प नहीं हैं, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थवेद तथा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद नहीं हैं। आज की शिक्षा मैकाले की शिक्षा पर ही चल रही है। वही मैकाले जिसने गुरुकुलों को तुड़वा डाला था। संस्कृत को हटाकर अंग्रेजी भाषा थोप दी थी। संस्कृत के विद्यालय नष्ट करा दिये थे। उसे पता था कि संस्कृत के ग्रन्थों में भारत के प्राचीन गौरव का रहस्य छिपा है। संस्कृत को हटाने से यहाँ के भारतीय कालान्तर में अपनी शिक्षा व भारत के गौरवशाली योद्धाओं, वीर-वीरांगनाओं यहाँ की पावन संस्कृति से दूर हो जायेंगे। ऋषियों के ज्ञान से दूर हो जायेंगे। आज वही तो हो रहा है। हमने अपनी संस्कृति को ही भुला दिया है। आज सरकार, समाज व कर्णधारों को जब घोटालों, भ्रष्टाचारों में लिप्त देखा जाता है तो प्रबुद्धजनों को दु:ख होता है। परिवारों में दुश्चरित्रता, लूट, बलात्कार, कामुकता का प्रदर्शन, अर्धनग्न देह का प्रदर्शन, वृद्धजनों का तिरस्कार, विद्वानों का अनादर व अनेक हृदय-विदारक कुकृत्य समाज में देखने में आ रहे हैं। अधिकांशत: लोग वेदों को नहीं जानते, ऋषियों को नहीं जानते, महर्षि दयानन्द सरस्वती, जिन्होंने पुन: भारत की पावन भूमि पर वेद प्रकाश कर जनता को जागृत किया और अपना जीवन समर्पित कर दिया। बहुत से तो उनको ही नहीं जानते। कारण स्पष्ट है कि हमारे शिक्षा जगत् के कर्णधारों ने भी अंग्रेजी भाषा व परिवेश एवं अंग्रेजी संस्कृति को ही

शेष पृष्ठ 15 पर....

आर्य जनता से अपील

नशामुक्त हरयाणा अभियान (जनचेतना यात्रा)
होडल से चण्डीगढ़ (2 से 15 अक्तूबर 2023)

मान्यवर,

निवेदन यह है कि आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा प्रदेश आर्य संगठन में प्रमुख वरिष्ठ आर्य सक्रिय कार्यकर्त्ता का स्थान रखते हैं। हमारा मानना है कि जब-जब आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने मैदान में निकलकर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ बिगुल बजाया है उससे जहाँ आम जनता में सुधार हुआ है, वहाँ आर्यसमाज के संगठन को भी मजबूती मिली है।

इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए एक जनचेतना यात्रा 'नशामुक्त हरियाणा अभियान' होडल से चण्डीगढ़ दिनांक 2 से 15 अक्तूबर 2023 तक निकाली जा रही है जिसमें अनेक साधु-सन्त, विद्वान् व आर्य कार्यकर्त्ता सैकड़ों की संख्या में भाग ले रहे हैं। इस यात्रा में कम से कम 100 या 125 कार्यकर्त्ता पूरी यात्रा के दौरान रहेंगे। बाकी कार्यकर्त्ता अपने-अपने जिलों में एक दिन पूरा साथ रहकर समय का योगदान दे सकते हैं। इसके लिए आप पूर्व में सूचना दे देंगे तो व्यवस्था में अनुशासन रहेगा।

दूसरा आपसे यह भी प्रार्थना है कि आप अपने व पड़ोस के गांव में यात्रा के स्वागत, भोजन व आर्थिक सहयोग में भी अपना योगदान देने/दिलवाने की कृपा करेंगे। ऐसे सामाजिक अभियान सबके सहयोग से ही पूर्ण होते हैं। आखिरी बात यह है कि यह अभियान हरयाणा के गाँवों से शराब के ठेके बन्द करवाने का चलाया जा रहा है। इसलिए जिन-जिन गाँवों में शराब के ठेके हैं, उन गाँवों के सरपंच व मौजीज लोगों से मिलकर शराब ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव पास करवाकर हरयाणा सरकार व आबकारी विभाग को भेजें तथा उसकी एक प्रति सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक व अधिकारियों तक भेजने का कष्ट करें। इसके लिए आपका अत्यन्त आभार रहेगा। सधन्यवाद।

अध्यक्ष
स्वामी नित्यानन्द सरस्वती
नशाबन्दी परिषद् हरयाणा
दयानन्दमठ रोहतक
मो० 8053662657

संयोजक
सेठ राधाकृष्ण आर्य
प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
मो० 9815737596

प्राकृतिक आपदाएँ प्रकृति को आँख दिखाने का नतीजा

कभी बाढ़ जैसे हालात तो कभी सूखे जैसे, कभी कोरोना महामारी तो कभी भूकंप और भी ना जाने किस-किस रूप में मनुष्य के जीवन और आश्रय को लीलती प्रकृति और जब प्रकृति अपना रौद्ररूप दिखाती है तो हमें सबसे पहले सर्वशक्तिमान् ईश्वर की याद आती है, लेकिन हम तब यह नहीं सोचते कि उसी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना प्रकृति को हमने आधुनिकता के नाम पर पूरी तरह से उजाड़ने का काम किया है। धरती, वायु, जल, जंगल कुछ भी तो नहीं छोड़ा हमने आखिर, आधुनिकता और सुख-सुविधाओं के लालच में सर्वशक्तिमान् ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना प्रकृति को ही चुनौती देनी शुरू कर दिया। बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं यह सब यूं ही तो नहीं है बल्कि यह सब नतीजा है प्रकृति को आंख दिखाने का, यह परिणाम है आदमी के उस अहंकार का जिसने वह सर्वशक्तिमान् ईश्वर को भी चुनौती देने से नहीं चूकता और चुनौती देता है परमपिता परमात्मा की बनाई गई उस अति प्रिय प्रकृति को जो हमेशा से जीवनदायिनी रही है। सिर्फ अमीर के लिए नहीं बल्कि गरीब के लिए भी, बिना किसी भेदभाव के, बिना कोई धर्म, जाति और क्षेत्र के बंटवारे के लेकिन एक हम हैं जो आधुनिकता की आड़ में और भौतिक सुख-सुविधाओं के चक्कर में प्रकृति को ही आंख दिखाने निकले हैं और भूल चुके हैं कि प्रकृति कितनी सर्वशक्तिमान् है। जो प्यार करना भी जानती है और समय आने पर दुत्कारना भी। कभी हमने आधुनिकता के नाम पर प्रकृति द्वारा बनाए गए जंगलों को काटकर कंक्रीट के जंगल बना दिए। कभी हमने सड़क चौड़ी करने के नाम पर पहाड़ों को बीच से काट डाला। तो कभी खेती से अत्यधिक मुनाफा कमाने के चक्कर में जहरीली दवाइयां और पेस्टिसाइड डालकर इस अन्नपूर्णा धरती माता को ही बंजर कर डाला। जिसने हमें अन्न पैदा करने के लिए स्थान दिया। एक घर में चार-चार, पांच-

पांच अनावश्यक वाहनों के माध्यम से पूरी तरह वायु को प्रदूषित कर डाला और हां, जल को भी तो नहीं बख्शा हमने, हाल ही में पूरे उत्तर भारत में बाढ़ की स्थिति पैदा हो गई। जिसमें हजारों गांव के गांव डूब गए और लोगों को जान-माल एवं धन का भारी नुकसान हुआ। हमने तो लालच और अहंकार में चूर होकर अपनी जीभ के स्वाद के लिए उन निरीह पशु-पक्षियों को भी नहीं बख्शा जो अपनी जान बचाने के लिए हमसे बोलकर रहम की भीख भी नहीं मांग सकते। हमने इंसान होकर इंसान को भी नहीं बख्शा, तो सोचिए आखिर हमने छोड़ा ही किसको? जब पाप, अहंकार अपनी चरमसीमा पर पहुंच जाता है तो उस अहंकार और पाप को कम करने के लिए प्रकृति इसी तरह का रौद्ररूप धारण करती है। कभी बाढ़ के रूप में तो कभी सूखे के रूप में, कभी भूकंप के रूप में तो कभी कोरोना वायरस के रूप में, यह बताने के लिए कि हम इंसानों की औकात क्या है। हम पहले भी प्रकृति का क्रोध कोरोना महामारी, भूकंप, सूखा, बाढ़ और ना जाने किस-किस रूप में देख चुके हैं, लेकिन बावजूद इसके हम सब कुछ समझकर भी समझना नहीं चाहते तो कायदे से प्रकृति न केवल हमें तरीके से समझाती है, बल्कि यह भी बताती है कि अगर हम समझाने पर भी नहीं सुधरे तो हालात बद से और भी बदतर हो जाएंगे। तब हर ओर विनाश होगा और हमारा सारा अहंकार चंद सैकण्डों में चकनाचूर हो चुका होगा। इसलिए अभी भी समय है समझिए और अन्य लोगों को भी समझाइए, क्योंकि अगर प्रकृति समझाने पर आएगी तो समस्या बेहद विकराल हो जाएगी। जिससे न हम बच पाएंगे और न ही आप और न ही बच पाएगा हमारी सुख-सुविधाओं का वह संसार जो हमने प्रकृति को आधुनिकता के नाम पर आंख देते हुए बसाया है।

-प्रदीप दलाल की कलम से...

मन्दिर का उद्घाटन सांसद के हाथों सम्पन्न

रेवाड़ी, 6 नवम्बर। नगर के पाश कॉलोनी सैक्टर-3 में आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास सांसद डॉ० सुधा यादव ने किया। आर्यसमाज स्थल पर आयोजित समारोह में नीलम गर्ग तथा नत्थूराम शर्मा ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। इस अवसर पर सविता आर्या ने डॉ० सुधा यादव को शॉल पहनाकर उनका सम्मान किया। श्री जीवानन्द नैष्ठिक ने डॉ० सुधा यादव की जीवनी पर प्रकाश डाला तथा सुखदेव आर्य मन्त्री आर्यसमाज सैक्टर-3 ने अभिनन्दन-पत्र पढ़कर मुख्य अतिथि को भेंट किया।

समारोह को श्रीमती पुष्पा शास्त्री नेत्री भाजपा तथा इन्द्र सिंह उपमंडल अधिकारी (ना०) कोसली ने भी संबोधित किया। समारोह का आयोजन आर्यसमाज रेवाड़ी तथा आर्यसमाज सैक्टर-3 ने संयुक्त रूप से किया, जिसमें कप्तान रघुबीर सिंह, सुखराम आर्य, मातुराम शर्मा, मनोहर लाल, एवं लाला रामेश्वर दयाल जी का विशेष मार्गदर्शन रहा। बुद्धदेव आर्य प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-3 ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद किया तथा आर्यसमाज की ओर से 'सत्यार्थप्रकाश' भेंट किया। बुद्धदेव आर्य ने एक प्रस्ताव रखा कि दूरदर्शन पर अश्लीलता का प्रदर्शन बन्द होना चाहिए, जो सर्वसम्मति से पास हो गया। इस प्रस्ताव के बारे में डॉ० सुधा यादव ने आश्वासन दिया कि वह सरकार से बात करेंगी तथा आर्यसमाज मन्दिर निर्माण के लिए हरसंभव सहायता देने का भी आश्वासन दिया।

उपरोक्त कार्यक्रम का मंच संचालन जयप्रकाश ने किया। कार्यक्रम विगत 4 नवम्बर से प्रारमी हुआ था जिसका रविवार को विधिवत् समापन हुआ। यज्ञ के पश्चात् दड़ौली आश्रम के स्वामी शरणानन्द जी धर्मप्रेमियों को आशीर्वाद दिया। समापन समारोह पर गुरुकुल घासेड़ा के ब्रह्मचारियों ने व्यायाम प्रदर्शन व चमत्कारी खेल का प्रदर्शन किया।

भूकम्प पीड़ितों के सहायतार्थ 11 हजार रुपए दिए

शहर के सैक्टर तीन के पदाधिकारियों ने भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए 11 हजार रुपये का ड्राफ्ट जिला उपायुक्त को भेंट किया। इस मौके पर आर्यसमाज के प्रधान बुद्धदेव यादव, उपप्रधान भानी सहाय यादव व सचिव सुखदेव आर्य उपस्थित थे। आर्यसमाज के प्रधान बुद्धदेव ने सैक्टर तीन के वासियों से अपील करते हुए कहा कि भूकम्प पीड़ितों के दुःखों को अपना दुःख समझते हुए इस बात गुलाल के साथ होली नहीं खेलें।

बुद्धदेव आर्यसमाज के बने प्रधान

रेवाड़ी। सैक्टर-3 के निवासी बुद्धदेव को सर्वसम्मति से आर्यसमाज सैक्टर-3 इकाई का प्रधान चुन लिया गया। इसी के साथ उन्हें अपनी कार्यकारिणी के गठन का भी अधिकार दे दिया गया। बुद्धदेव ने बताया कि उनकी प्राथमिकता होगी कि वह हुडा द्वारा उपलब्ध कराए गए सैक्टर-3 में 822 गज के प्लाट पर शीघ्र ही मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ करायेंगे। इसी के साथ-साथ आर्यसमाज इस क्षेत्र में अपनी अन्य गतिविधियाँ भी जारी रखेगा।

आर्यसमाज सैक्टर-तीन रेवाड़ी द्वारा भूकम्प पीड़ितों की सुख एवं शान्ति हेतु आयोजित हवन में भाग लेते हुए आर्यसमाज प्रधान श्री बुद्धदेव यादव उप जिला न्यायवादी, श्री सुखदेव आर्य, स्वामी शरणानन्द जी, श्री जीवानन्द नैष्ठिक, श्री रणधीरसिंह कापड़ीवास एवं अन्य।

स्त्री शिक्षा के सबसे बड़े पक्षधर थे स्वामी दयानन्द—राधाकृष्ण आर्य

- गुरुकुल चोटीपुरा में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने 5100 धनराशि दान में प्रदान दी।

प्राचीन समय में जब लड़का और लड़की में भेद किया जाता था। उस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बेटियों की शिक्षा की पुरजोर वकालत की और कहा कि लड़कों के समान लड़कियों को भी शिक्षा के समान अवसर मिलने चाहिएं और तब से और यह समाज में बेटों के साथ बेटियों को भी गुरुकुल शिक्षा परंपरा में शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं और बेटियां पढ़-लिखकर आज कई क्षेत्रों में बेटों से भी अग्रणी हैं। उक्त अभिव्यक्ति आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने गुरुकुल चोटीपुरा, अमरोहा में दी।

उन्होंने गुरुकुल का दौरा किया और कहा कि गुरुकुल चोटीपुरा बेहद प्रसिद्ध गुरुकुल है और इसी गुरुकुल में उनकी अपने बेटी ने भी शिक्षा ग्रहण की है। गुरुकुल में केवल किताबी शिक्षा नहीं अपितु वेदों का ज्ञान, संस्कार और अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता है। जो भविष्य में बेटियों के लिए नए अवसर प्रदान करता है। राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि गुरुकुल परंपरा में बच्चों को हर प्रकार की शिक्षा में पारंगत बनाया जाता है और गुरुकुल चोटीपुरा गुरुकुल शिक्षा की कीर्ति को चहुंओर फैला रहा है। उन्होंने सभी से अपील करते हुए कहा कि अगर अपने बेटा या बेटी को सर्वगुण संपन्न बनाना है तो हमें फिर से गुरुकुल शिक्षा पद्धति की ओर लौटना ही होगा। क्योंकि गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही यह एकमात्र शिक्षा पद्धति है जिसमें सभी का सर्वांगीण विकास कर बच्चों को सर्वगुण संपन्न बनाया जाता है।

इस अवसर पर उन्होंने 5100 रुपए दान स्वरूप गुरुकुल चोटीपुरा में दिए। इस अवसर पर गुरुकुल आचार्या बहन सुमेधा जी, कोलेजियम सदस्य सुरेंद्र आर्य नरवाल, वेदप्रचार अधिष्ठाता विशाल आर्य, कुलदीप आर्य आदि उपस्थित रहे।

सुब्रतो कप टूर्नामेंट में गुरुकुल कुरुक्षेत्र रहा प्रथम

- गुरुकुल के खिलाड़ी राज्य स्तर पर करेंगे जिला का प्रतिनिधित्व।

कुरुक्षेत्र, 21 जुलाई 2023-जिला शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित सुब्रतो फुटबाल टूर्नामेंट में गुरुकुल कुरुक्षेत्र की अंडर-14 तथा अंडर-17 टीमों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया और राज्य स्तरीय टूर्नामेंट के लिए चयनित हुई। अब गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ये खिलाड़ी फतेहाबाद में होने वाली राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में कुरुक्षेत्र जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे। प्रथम स्थान हासिल कर गुरुकुल पहुंची दोनों टीमों का गुरुकुल कैम्पस में जोरदार स्वागत किया गया। प्रधान राजकुमार आर्य, निदेशक ब्रिगेडियर प्रवीण कुमार, प्राचार्य सुबे प्रताप, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने सभी खिलाड़ियों को लड्डू खिलाकर जीत की बधाई दी। वहीं मुख्य संरक्षक संजीव आर्य, फुटबाल कोच अनीस आर्य, डीपीई देवीदयाल, अरुणकुमार, शुभम् आर्य ने भी खिलाड़ियों को शानदार सफलता पर बधाई दी।

जानकारी देते हुए डीपीई अरुण कुमार ने बताया कि जिला शिक्षा विभाग द्वारा 19-20 जुलाई को यूनिवर्सिटी सीनियर सैकेण्डरी मॉडल स्कूल के खेल मैदान में जिला स्तरीय सुब्रतो फुटबाल कप का आयोजन किया गया जिसमें जिला कुरुक्षेत्र के थानेसर, शाहाबाद, लाडवा तथा पेहवा खण्ड के अलग-अलग विद्यालयों की 20 से अधिक टीमों ने भाग लिया। अंडर-14 तथा अंडर-17 दोनों आयुवर्ग में गुरुकुल कुरुक्षेत्र की टीमों ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान हासिल किया। निदेशक ब्रिगेडियर प्रवीण कुमार ने कहा कि गुरुकुल के संरक्षक एवं गुजरात के राज्यपाल महामहिम आचार्य श्री देवव्रत जी के मार्गदर्शन में गुरुकुल सफलता की बुलंदियों को छू रहा है। शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी गुरुकुल के छात्र बेहतरीन प्रदर्शन करते हैं, यह हम सभी के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि उन्हें पूर्ण विश्वास है कि राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भी गुरुकुल के खिलाड़ी शानदार सफलता अर्जित करेंगे।

आस्तिकता और चमत्कार... पृष्ठ 8 का शेष...

परमेश्वर संसार के कण-कण में व्यापक है। हमारे हृदय में भी। वह किसी भी कार्य को करने से पहले, हमारे मन में संकल्प आते ही जान लेता है। वह हमारे अच्छे बुरे कर्मों को ठीक प्रकार से जानता है। उससे छुपकर कोई पाप नहीं किया जा सकता और पाप करने के बाद उसके दुःखरूप फल से किसी भी प्रकार से बचा नहीं जा सकता। यही आस्तिकता की आधारशिला है। किसी चौथे, सातवें आसमान या किसी सतलोक में बैठा हुआ भगवान् न तो हमारे कर्मों को जान सकता है और न फल दे सकता है। उसको वहाँ बैठाकर फिर हमें उसके संदेश वाहकों की कहानी बनानी पड़ती है। फिर इसकी जांच का चक्कर कि कौन संदेशवाहक झूठा है कौन सच्चा? फिर इसके प्रमाण के लिए चमत्कार! और 'चमत्कार' तो सारे ही करना जानते हैं।

संभवतः उस विदेशी विचारक ने ठीक ही कहा कि इस देश में कोई भगवान् अवश्य है। कोई भगवान् का दूत बनकर खा रहा है। अपने-अपने अलग-अलग भगवान् बनाकर खा रहे हैं। कोई भगवान् को गाली देकर खा रहा है। भगवान् की भक्ति से मिलने वाले आत्मिक आनन्द को प्राप्त करने के बारे में भी कोई सोचे तो सचमुच में चमत्कार हो जाए।

सबसे पुरानी व श्रेष्ठ है.... पृष्ठ 10 का शेष.....

महत्त्व दिया। पाठ्यक्रमों में वेद व वैदिक ग्रन्थों, हमारे ऋषि-मुनियों के ज्ञान उनकी जीवनी को नहीं जोड़ा। इसलिए हम आज सांस्कृतिक रूप से सामाजिक व धार्मिक रूप से विनाश की ओर जा रहे हैं। हमें आज ही वेदों व पुरातन ऋषियों के पावन ज्ञान व शिक्षा-व्यवस्था की ओर चलना होगा।

इस वैदिक संस्कृति के पथ पर चलकर राष्ट्र के रक्षा आन्दोलन में महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पण्डित लेखराम, महात्मा अमर स्वामी जैसे अनेक महापुरुषों ने अपना जीवन आहूत कर दिया। आज आर्यजनों को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए क्रान्तिरूपी आन्दोलन को आगे बढ़ाना होगा। 200वीं जन्म जयन्ती पर वैदिक साहित्य, वैदिक शिक्षा, वेदप्रचार तथा समाज सुधार के पावन वैदिक पथ का अनुसरण करते हुए जीवन को कृतार्थ करते रहें।

हे मनुष्य जुआ मत खेल!... पृष्ठ 7 का शेष...

मार्ग पर चलकर अपने पारिवारिक जीवन को सुख और समृद्धि से युक्त करूँगा। यही संकल्प लेकर वह प्रातः कर देता है कि वह आज से कभी जुआं नहीं खेलेगा, क्यूंकि जो जूए को खेलेगा, उसकी यह प्रवृति उसे नकारा और निकम्मा बना देती है और अंततः उसे पतन का कारण बनती है।

इसीलिए 13 मन्त्र में इस सूक्त की फलश्रुति अर्थात् जूए के त्याग के लाभ का ऋषि वर्णन करते हैं-हे मनुष्य जुआ मत खेल! खेती कर! परिश्रम और श्रम से कमाये गए धन को सब कुछ मान। उसी में संतोष और सुख का अनुभव कर। पुरुषार्थ से तुम्हें अमृत तुल्य दूध देने वाली गौ मिलेगी। पति-परायण सेवा करने वाली पत्नी मिलेगी। परमात्मा भी उसके अनुकूल सुख देगा।

न युधिष्ठिर ने जुआ खेला होता। न महाभारत का युद्ध होता। न देश का पतन होता। इसलिए हे देशवासियो! जुआ, क्रिकेट, सट्टा आदि दोषों से सदा दूर रहिये।

अंतिम 14वें मंत्र में जुआ छोड़ने के पश्चात् अपने अन्य जुआरी मित्रों को भी जुए के त्याग के लिए प्रेरित करे, ऐसा सन्देश दिया गया है। हमारे समाज में हम चारों ओर देखें तो हम पाएंगे कि संसार में जो भी दशा एक जुआरी की, उसके परिवार की बताई गई है। वह नितांत सत्य है। एक राजा का कर्तव्य समाज की नशा, दुर्व्यसन आदि से रक्षा करना भी है। इसलिए वेदों की अत्यन्त मार्मिक अपील को दरकिनार कर सरकार को जुआ, सट्टेबाजी आदि से समाज की रक्षा करनी चाहिए।

सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के अधिकारियों को अवगत कराया जाता है कि जो भी आर्यसमाज एवं संस्था सभा के PAN नम्बर तथा 80G का प्रयोग कर रही हैं, वह सभा कार्यालय को सूचित करें। ऐसा न करने की अवस्था में वह आर्यसमाज तथा संस्था हानि के लिए स्वयं जिम्मेवार होंगी। – उमेद शर्मा, सभामन्त्री

क्या महाभारत में मन्त्र हैं... पृष्ठ 6 का शेष....

विदुरस्तं तथेत्युक्त्वा भीष्मेण सह भारत।
पाण्डुं संस्कारयामास देशे परमपूजिते॥ (5)
नृसिंहं नरयुक्तेन परमालंकृतेन तम्।
अवहन् यानमुख्येन सह माद्रया सुसंयतम्॥ (9)
न्यासयामासुरथ तां शिबिकां सत्यवादिनः।
सभार्यस्य नृसिंहस्य पाण्डोरक्लिष्टकर्मणः॥ (17)
ततस्तस्य शरीरं तु सर्वगन्धाधिवासितम्।
शुचिकालीयकादिग्धं दिव्यचन्दनरुषितम्॥ (18)
संछन्नः स तु वासोभिर्जीवन्निव नराधिपः।
शुशुभे स नरव्याघ्रो महार्हशयनोचितः॥ (21)
याजकैरभ्यनुज्ञाते प्रेतकर्मण्यनुष्ठिते।
घृतावसिक्तं राजानं सह माद्रया स्वलंकृतम्॥ (22)
तुङ्गपद्मकमिश्रेण चन्दनेन सुगन्धिना।
अन्यैश्च विविधैर्गन्धैर्विधिना समदाहयन्॥ (23)
ततस्तयोः शरीरे द्वे दृष्ट्वा मोहवशं गता।
हा हा पुत्रेति कौशल्या पपात सहसा भुवि॥ (24)

धृतराष्ट्र ने विदुर से कहा-विदुर! राजविधि के अनुसार राजाओं में सिंहरूपी पाण्डु और विशेषतः माद्री की सम्पूर्ण प्रेत क्रिया भली प्रकार कराओ। विदुर ने 'तथास्तु' कहकर भीष्म जी के साथ पवित्र स्थान में पाण्डु का अन्तिम संस्कार कराया। माद्री सहित राजा पाण्डु को अलंकृत गाड़ी में पालकी सहित रखा। (गंगा के पावन तट पर) अनायास ही महान् पराक्रम करने वाले सत्यवादी नरश्रेष्ठ पाण्डु और उनकी पत्नी माद्री की उस पालकी को रखा। उनके शरीरों पर दिव्य सुगन्धित चन्दन लगाया हुआ था। इस प्रकार बहुमूल्य शय्या पर शयन करने योग्य नरश्रेष्ठ राजा पाण्डु वस्त्रों से ढके हुए जीवित के समान शोभा पा रहे थे। घृत से नहलाए गए और अलंकृत हुए राजा का माद्री सहित तुंग और पद्म नामक पदार्थों से मिली हुई सुगन्धित चन्दन की लकड़ी तथा दूसरे भांति-भांति के अच्छे गन्धयुक्त पदार्थों से (युधिष्ठिर द्वारा) विधिपूर्वक दाहसंस्कार कराया गया। तब उन दोनों के शरीरों को देखकर माता कौशल्या (अंबालिका) हाय पुत्र! कहकर भूमि पर गिर पड़ी।

क्रमशः अगले अंक में....

वेद-प्रवचन... पृष्ठ 2 का शेष...

बन्द कर देता है। बाड़ा एक पाश है जो भेड़ों की भलाई के लिए बनाया गया है। इसी प्रकार वरुणदेव के पाशों का प्रयोजन भी जीवों का हित है। यदि ये पाश न होते तो संसार कितना कष्टमय होता यह बात साधारण मनुष्यों की समझ में नहीं आती। चोर अंधेरी रात को प्यार करता है, परन्तु यदि रात अंधेरी ही रहे तो चोर का रहना भी कठिन हो जाए। कठोर-से-कठोर शासन को लोग दीर्घकाल तक सहते रहते हैं, परन्तु एक घण्टे की अराजकता में **'त्राहि माम्, त्राहि माम्'** होने लगता है। इसलिए बुद्धिमान् लोग वरुण के पाशों का मूल्य समझते हैं और यदि उनसे कोई पाप हो जाता है तो उसके लिए पश्चाताप या प्रायश्चित्त करते हैं और वरुणदेव से प्रार्थना करते हैं कि उन पापों से जो हानि होती है वह न हो। यदि दण्ड भोग कर पाप की प्रवृत्ति नष्ट हो जाए तो यह सबसे बड़ा लाभ है। इसलिए कहिए-

'मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः'।

शुभकामना...... पृष्ठ 4 का शेष......

भेदभाव किया जाता है अर्थात् ऊपर मन्त्र में निर्दिष्ट बातों के पालन में पूर्णता नहीं आती, वहाँ साथ-साथ रहना, जीना कठिन होता है।

इस सारे का सारांश यह है कि जहाँ एक-दूसरे को हलका, झूठा सिद्ध करने या नीचा दिखाने का वाद-विवाद होता है या मेरी ही मानी जाए का हठ चलता है, वहाँ एकता की दृष्टि से विचार नहीं हो सकता। हाँ, कई बार एक दूसरे से गलती हो जाती है। प्रायः गलती सबसे हो जाती है और स्वतः या संकेत पर पूरा सुधारना चाहता है, वह अवसर देना चाहिए। तब अड़ना अच्छा नहीं। पहले से पक्षपात, आग्रह को लेकर बात की जाती है तो ऐसी स्थिति में परिणाम अच्छे रूप में सामने नहीं आता।

समान का एक अर्थ जहाँ एक जैसा प्रसिद्ध है, वहाँ स+मान के आधार पर यह भी कहना चाहिए कि आपस में मन, हृदय से आदर, सत्कार, इज्जत देना। यह बात परस्पर सम्बन्ध के आधार पर, योग्यता, आयु की दृष्टि से परस्पर बोलते हुए, किसी वस्तु को देते हुए या किसी भी ढंग से वर्तते हुए प्रकट होनी चाहिए कि इज्जत दी जा रही है तभी कहीं सुख-सम्पदा टिकती है। इसी में गृहस्थ की सफलता है।

गुजरात राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य के नेतृत्व में प्रदेश भर में वेदप्रचार मंडलियों द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं एवं वेदप्रचार कार्यक्रम उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों द्वारा आयोजित किये जा रहे हैं।

गुरुकुल चोटीपुरा में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्त्री-शिक्षा के सबसे बड़े पक्षधर पक्षधर थे। प्रधान जी ने 5100 रुपए दानस्वरूप गुरुकुल चोटीपुरा में दिए। इस अवसर पर गुरुकुल आचार्या बहन सुमेधा जी, कोलेजियम सदस्य सुरेंद्र आर्य नरवाल, **वेदप्रचार अधिष्ठाता विशाल आर्य, कुलदीप आर्य उपस्थित रहे।**

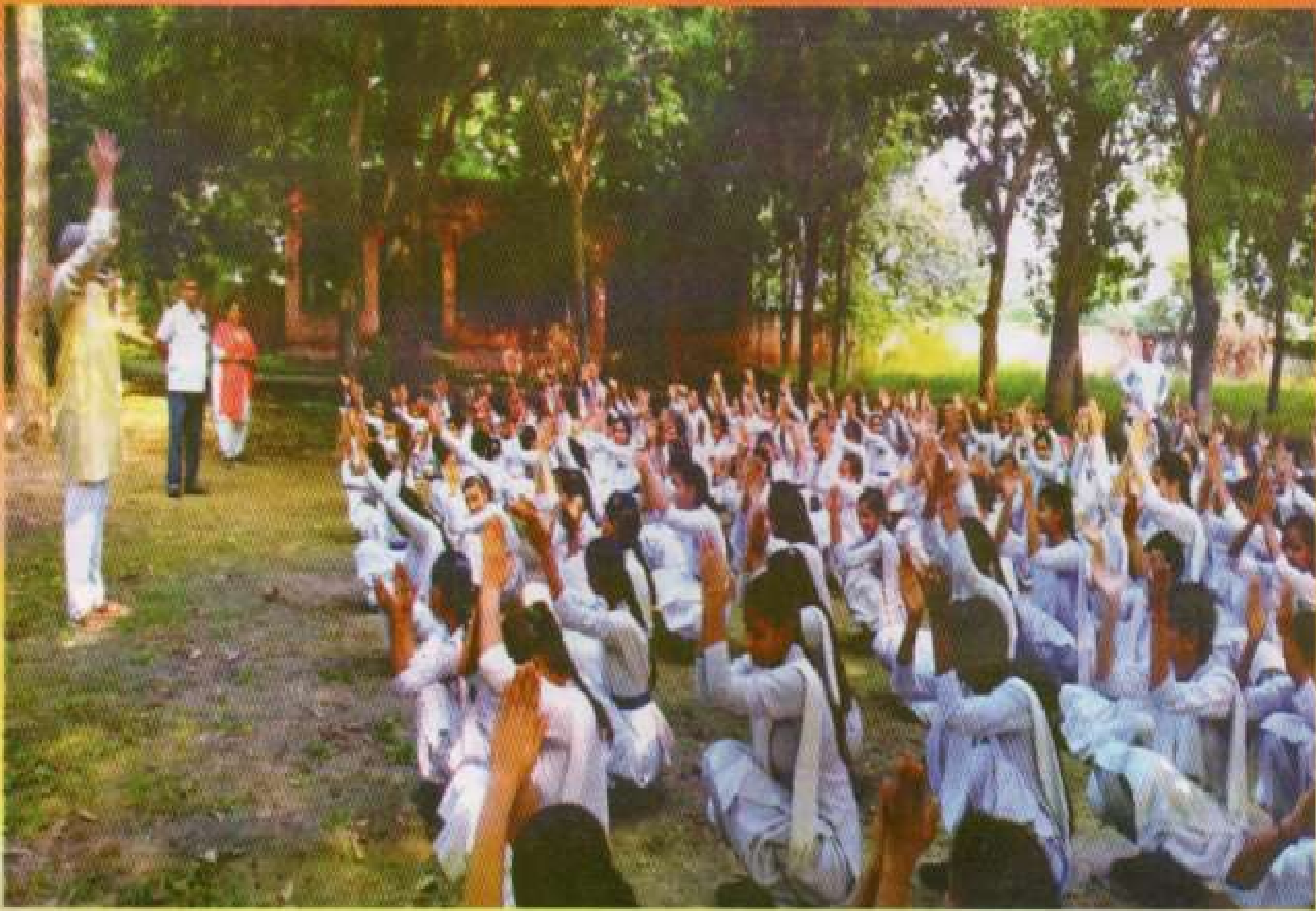

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य के दिशा-निर्देशन में चलाए जा रहे विशेष प्रचार अभियान के अन्तर्गत आज प्रातःकाल गांव भटगांव के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में ध्यान, प्राणायाम करवाते हुए रमेश आर्य वेदप्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक।

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता .... नमान रोड

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा